श्री विद्याप्राप्ति सरस्वती विधान

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

रचयिता

आर्ष मार्ग संरक्षक, कविहृदय, प्रज्ञायोगी

दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

प्रकाशक

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

पुस्तक का नाम	:	श्री विद्याप्राप्ति सरस्वती विधान
आशीर्वाद	:	गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
	:	वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव
रचनाकार	:	दिगम्बर जैनाचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव
सहयोग	:	मुनि श्री सुयशगुप्तजी, मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी ग. आर्यिका राजश्री माताजी, ग. आर्यिका क्षमाश्री माताजी आर्यिका आस्थाश्री माताजी, क्षु. सुधर्मगुप्तजी, क्षु. धर्मगुप्तजी, क्षु. श्रवणगुप्तजी, क्षु. विनयगुप्तजी क्षु. धन्यश्री माताजी, क्षु. तीर्थश्री माताजी, ब्र. केशरबाई
सर्वाधिकार सुरक्षित	:	रचनाकाराधीन
प्रकाशन वर्ष	:	2019
संस्करण	:	तृतीय-1000
प्रकाशक	:	श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) Email : dharamrajshree@gmail.com
प्राप्ति स्थान		1. प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ 2. श्री धर्मतीर्थ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 9421503332 3. श्री नितिन नखाते, नागपुर, 9422147288 4. श्री राजेश जैन (केबल वाले), नागपुर 9422816770 5. श्री रमणलाल साहू जी, औरंगाबाद मो. 9823182922 6. श्री सुबोध जैन, राधेपुरी, दिल्ली 9910582687
मुद्रक	:	राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर 9829050791 Email : rajugraphicart@gmail.com

गुरु मंत्र महोत्सव के उपलक्ष में समर्पित

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे॥

3
2 卐 24
5

विनय पाठ

(दोहा)

प्रथम जिनेश्वर देव हो, वीतराग सर्वज्ञ।
हित उपदेशी नाथ तुम, ज्ञानरवि मर्मज्ञ॥1॥
केवलज्ञानी बन प्रभो, हरा जगत् अंधियार।
तीन लोक के बंधु बन, किया जगत् उपकार॥2॥
धर्म देशना से मिला, जग को दिव्य प्रकाश।
तव चरणों में नित रहे, यही करें अरदास॥3॥
कर्म बेड़ियाँ तोड़ने, भक्ति करें त्रयकाल।
तीन योग से हे प्रभो !, चरणों में नत भाल॥4॥
चतुर्गति भव भ्रमण से, तारों हमें जिनेश।
दयानिधि जिन ! कर दया, हरलो पाप विशेष॥5॥
प्रभुवर पूजा आपकी, सर्व रोग विनशाय।
विष भी अमृत हो प्रभो !, शत्रु मित्र बन जाय॥6॥
हलधर बलधर चक्रधर, अर्चा के उपहार।
परम्परा जिनभक्ति से, दे प्रभु पद उपहार॥7॥
बड़े पुण्य से जिन मिले, मिला प्रभु का द्वार।
मुक्त करो त्रय रोग से, विनती बारम्बार॥8॥
हम सेवक प्रभु आपके, हे अबोध ! अनजान।
राग–द्वेष अज्ञान हर, दे दो सच्चा ज्ञान॥9॥

मंगल उत्तम शरण है, मंगलमय जिनधर्म।
मंगलकारी सब गुरु, हरो हमारे कर्म॥10॥
चौबीसों जिनवर नमूँ, नमन पंच परमेश।
जिनवाणी गणधर गुरु, 'आस्था' नमें हमेश॥11॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूजा आरंभ (हिन्दी)

ॐ जय-जय-जय - नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र महिमा

(चौपाई)

अपवित्र या जन पवित्र हो, सुस्थित हो या दुस्थित भी हो।
नमस्कार मंत्रों को ध्यायें, पापों से छुटकारा पायें॥1॥
सर्व अवस्था में भी ध्यायें, पापी भी पावन बन जाये।
जो सुमिरे नित परमातम को, अन्दर बाहर शुचि बने वो॥2॥
अपराजित ये मंत्र कहाता, सब विघ्नों को दूर भगाता।
सब मंगल में मंगलकारी, प्रथम सुमंगल जग उपकारी॥3॥
महामंत्र णवकार हमारा, सब पापों से दे छुटकारा।
सब मंगल में प्रथम कहाता, महामंत्र मंगल कहलाता॥4॥

परम ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, सिद्धचक्र सुन्दर बीजाक्षर।
मैं मन-वच-काया से नमता, नमस्कार मंत्रों को करता॥5॥
अष्टकर्म से मुक्त जिनेश्वर, श्रीपति जिन मंदिर परमेश्वर।
सम्यक्त्वादि गुणों के स्वामी, नमस्कार मैं करता स्वामी॥6॥
जिनवर की संस्तुति करने से, मुक्ति मिले सारे विघ्नों से।
भूतादि का भय मिट जाता, विष निर्विष निश्चित हो जाता॥7॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे॥1॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शंभु छंद)

श्री मज्जिनेन्द्र हो विश्ववंद्य, तुम तीन जगत के ईश्वर हो।
तुम चऊ अनंत गुण के धारी, स्याद्वाद धर्म परमेश्वर हो॥
श्री मूल संघ की विधि से मैं, अपना बहु पुण्य बढ़ाने को।
मैं मंगल पुष्प चढ़ाता हूँ, जिन पूजा यज्ञ रचाने को॥1॥
त्रैलोक्य गुरु हे जिनपुंगव !, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
अपने स्वभाव में सुस्थित जिन, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥
सम्पूर्ण रत्नत्रय के धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
हे समवशरण वैभव धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥2॥
अविराम प्रवाहित ज्ञानामृत, सागर को पुष्प समर्पित है।
निज परभावों के भेद विज्ञ, जिनवर को पुष्प समर्पित है॥

त्रिभुवन को सारे द्रव्यों के, नायक को पुष्प समर्पित है।
त्रैकालिक सर्व पदार्थों के, ज्ञायक को पुष्प समर्पित है॥3॥
पूजा के सारे द्रव्यों को, श्रुत सम्मत शुद्ध बनाया है।
यह भाव शुद्धि के अवलम्बन, द्रव्यों को शुद्ध सजाया है॥
शुचि परमातम का अवलम्बन, आतम को शुद्ध बनाता है।
उसको पाने हे जिन ! तेरी, यह पूजा भव्य रचाता है॥4॥
अर्हत् पुराण पुरुषोत्तम जिन, उनमें न सचमुच गुरुता है।
मैं भी स्वभाव से उन सम हूँ, मुझमें न निश्चय लघुता है॥
प्रभु से हो एकाकार मेरा, मैं ऐसी भक्ति रचाता हूँ।
केवल ज्ञानाग्नि में अपना, मैं पुण्य समग्र चढ़ाता हूँ॥5॥

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमोऽपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

वृषभ सुमंगल करे हमारा, अजित सुमंगल करे हमारा।
संभव स्वामी मंगलकारी, अभिनंदन हैं मंगलकारी॥1॥
सुमतिनाथ हैं मंगलकारी, पद्मप्रभु हैं मंगलकारी।
श्री सुपार्श्व जिन मंगलकारी, चंद्रप्रभु हैं मंगलकारी॥2॥
पुष्पदंत हैं मंगलकारी, शीतल स्वामी मंगलकारी।
श्री श्रेयांस जिन मंगलकारी, वासुपूज्य हैं मंगलकारी॥3॥
विमलनाथ हैं मंगलकारी, श्री अनंत जिन मंगलकारी।
धर्मनाथ हैं मंगलकारी, शांतिनाथ हैं मंगलकारी॥4॥
कुंथुनाथ हैं मंगलकारी, अरहनाथ हैं मंगलकारी।
मल्लिनाथ हैं मंगलकारी, मुनिसुव्रत हैं मंगलकारी॥5॥
नमि जिनवर हैं मंगलकारी, नेमीनाथ हैं मंगलकारी।
पार्श्वनाथ हैं मंगलकारी, वीर जिनेश्वर मंगलकारी॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥

महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥2॥

अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥3॥

स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥4॥

फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥5॥

अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥6॥

मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥7॥

उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥8॥

आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आषीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥9॥

क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥10॥

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं

(9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज- हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों॥
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा॥
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन-माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म-जरा-मृत हरता हूँ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना॥ देव शास्त्र..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू ॥ देव शास्त्र..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥4॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया॥ देव शास्त्र..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा॥ देव शास्त्र..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ॥ देव शास्त्र..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है॥ देव शास्त्र..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है॥ देव शास्त्र..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोडूँ सब अभिमान॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा– काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नम: स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय–जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर–नार॥

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ॥
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ॥1॥

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ॥
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि–सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले॥2॥

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत–शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन॥
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन॥3॥

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता॥

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा॥4॥

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन॥
अहिक्षेत्र अणिंदा णमोकार जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर॥5॥

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल केशरिया को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वंदन॥
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी॥6॥

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरुओं को है वंदन॥7॥

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें॥
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

ऋद्धि मंत्र

स्वाहा बोलते हुये प्रत्येक मंत्र में यहाँ पुष्प चढ़ायें या धूप चढ़ायें। विधान करने से पूर्व ऋद्धि मंत्र अवश्य पढ़े।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

1. णमो जिणाणं
2. णमो ओहि-जिणाणं
3. णमो परमोहि-जिणाणं
4. णमो सव्वोहि-जिणाणं
5. णमो अणंतोहि-जिणाणं
6. णमो कोट्ठ-बुद्धीणं
7. णमो बीज-बुद्धीणं
8. णमो पादाणु-सारीणं
9. णमो संभिण्ण-सोदारणं
10. णमो सयं-बुद्धाणं
11. णमो पत्तेय-बुद्धाणं
12. णमो बोहिय-बुद्धाणं
13. णमो उजु-मदीणं
14. णमो विउल-मदीणं
15. णमो दस पुव्वीणं
16. णमो चउदस-पुव्वीणं
17. णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं
18. णमो विउव्वइट्ठि-पत्ताणं
19. णमो विज्जाहराणं
20. णमो चारणाणं
21. णमो पण्ण-समणाणं
22. णमो आगासगामीणं
23. णमो आसी-विसाणं
24. णमो दिट्ठिविसाणं
25. णमो उग्ग-तवाणं
26. णमो दित्त-तवाणं
27. णमो तत्त-तवाणं
28. णमो महा-तवाणं
29. णमो घोर-तवाणं
30. णमो घोर-गुणाणं
31. णमो घोर-परक्कमाणं
32. णमो घोर-गुण-बंभयारीणं
33. णमो आमोसहि-पत्ताणं
34. णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं
35. णमो जल्लोसहि-पत्ताणं
36. णमो विप्पोसहि-पत्ताणं
37. णमो सव्वोसहि-पत्ताणं
38. णमो मण-बलीणं
39. णमो वचि-बलीणं
40. णमो काय-बलीणं
41. णमो खीर-सवीणं
42. णमो सप्पि-सवीणं
43. णमो महुर सवीणं
44. णमो अमिय-सवीणं
45. णमो अक्खीण महाणसाणं
46. णमो वड्ढमाणाणं
47. णमो सिद्धायदणाणं
48. णमो सव्व साहूणं

(णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।)

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री सरस्वती विधान मण्डल

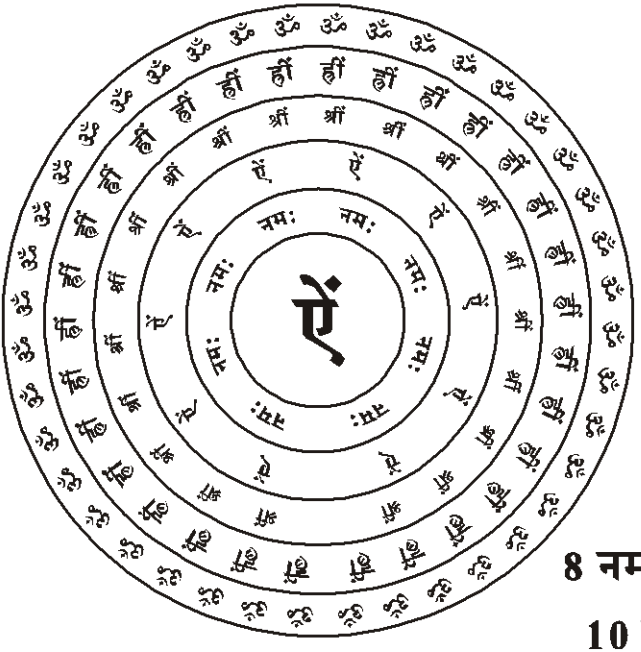

8 नमः
10 ऐं
20 श्रीं
30 ह्रीं
41 ॐ
कुल 109 अर्घ

श्री विद्याप्राप्ति सरस्वती विधान पूजन

(गीता छन्द)

हे भारती हंसासनी, वागीश्वरि माँ शारदा।
सुंदर अनेकों नाम से, जग पूज्य श्रुतदेवी सदा।।
अरिहंत मुख वासिनी हमें, अरिहंत रूप दिलाइये।
इस पुत्र के मन हंस पर, हंसासनी बस जाइये।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनी अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनी अत्र तित्र-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनी अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

नरसिंह की माता के लिए झारी सिंहमुखी।
झारी से जल चढ़ा के हम रहे सदा सुखी।।
पावन घड़ी सरस्वती विधान की बड़ी।
माँ शारदे घुमादे हम पे जादू की छड़ी।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो जलम् निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

चंदन के बहाने जो चरण मात के छुए।
हम भक्त ओत-प्रोत मातृभक्ति से हुए।। पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

मोरासनी के सिर पे दिव्य मोर मुकुट है।
अक्षत स्वरूप हम चढ़ायें रत्न मुकुट ये।। पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो अक्षातान् निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

चंपा की बिछुड़ी व चमेली की पैजनी।
पहना के तुझे भावना सद्भावना बनी।।
पावन घड़ी सरस्वती विधान की बड़ी।
माँ शारदे घुमादे हम पे जादू की छड़ी।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

माँ हमको खिला द्वादशांग की मिठाईयाँ।
हम आपको चढ़ा रहे द्वादश मिठाईयाँ।। पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

हम रत्न से सरस्वती की मूर्ति बनायें।
फिर रत्न दीप से महान आरती गायें।। पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

मंडल विधान का बना बिठायें आपको।
घट धूप के सजा चढ़ायें धूप आपको।। पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

शिवफल प्रदायिनी को फल अनेक चढ़ायें।
सुन-सुन के उससे लोरी मोह नींद भगायें।। पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो फलम् निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

हे वाग्वादिनी तू हमें वाक्यसिद्धी दे।
हम अर्घ चढ़ायें तू हमें आत्मसिद्धी दे।। पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

सुंदर सुवर्ण रत्नमयी वस्त्र आभरण।
पहना के तुझे हमको मिले श्रेष्ठ आचरण।। पावन घड़ी...

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो वस्त्रं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

विधान प्रारंभ

अथ शत नामाष्टक अर्घ्य

दोहा- जिनवाणी माता तेरा, करते भव्य विधान।
पुष्पाञ्जलि अर्पण करें, पाने ज्ञान निधान॥

अथ मण्डलस्योऽपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(शंभु छन्द)

1. श्री आदि ब्रह्म मुख से निकली, जिन दिव्य ध्वनि श्रुत प्रभावली।
गणधर मुख कुण्ड विराज रही, नय रंग तरंगों से उछली॥
हे ज्ञान निधी माँ सरस्वती, सब जीवों का अज्ञान हरो।
हम करें अर्चना अर्घ लिए, हमको सद्ज्ञान प्रदान करो॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिब्रह्ममुखाम्भोज प्रभवायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

2. हे मात ! आपका अंग-अंग, द्वादश अंगों से शोभित है।
मस्तक पर जिन प्रतिमा शोभे, जो करे जगत को लोभित है॥ हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री द्वादशांगिन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

3. हे अम्ब ! आपकी वीणा में, सब भाषा की स्वर लहरी है।
हर शब्द छन्द प्रगटे तुममें, जिनकी अनुभूति गहरी है॥ हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वभाषायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

4. माँ ! तुम 'वाणी' तुममें वाणी, भव्यों को शिवसुख दानी है।
शरणागत हर भवि प्राणी को जिनवाणी जग कल्याणी है॥ हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वाण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

5. जो सार वस्तु दिलवाती है, तो मात 'शारदा' कहलाती।
हम छोड़ जगत निःसार विषय, पाये तुमसे अमृत पाती॥ हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शारदायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

6. हे सरस्वती ! तेरा सुन्दर 'गिर', नाम सभी को भाता है।
अज्ञान गिरी का भेदन कर, गिरते को सदा उठाता है॥ हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

7. माँ सरस्वती ! दो ज्ञानमति, हम सरसमती को प्रगटायें।
जिसमें रस हो श्रुत अमृत का, वह अमृत का घट[1] प्रगटायें॥
हे ज्ञान निधी माँ सरस्वती, सब जीवों का अज्ञान हरो।
हम करें अर्चना अर्घ लिए, हमको सद्ज्ञान प्रदान करो॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सरस्वत्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

8. जो जिनवर ब्रह्मा से प्रगटी, चैतन्य ब्रह्म में वास करें।
वो ब्राह्मी माता कहलायें, मम आत्म ब्रह्म में वास करें॥ हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ब्राह्मयै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

9. हर वाक्य काव्य वा स्वर व्यंजन, बीजाक्षर की जो माता है।
'वाक्देवी' कहलाये जग में, मन उनको शीश झुकाता है॥ हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वाग्देवतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

10. शरणागत को अविनश्वर सुख, देवे जो सच्ची 'देवी' है।
विद्याधन दात्री[2] देवी माँ, हम भी तेरे पद सेवी हैं॥ हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री देव्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥10॥

11. तू सब जीवों की भर्त्री[3] माँ, श्री मात 'भारती' कहलाती।
भारत की भाग्य विधाता हो, किस्मत भक्तों की चमकाती॥ हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भारत्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥11॥

12. श्री जिनमुखवासी जगदम्बा, तू 'श्री निवासिनी' कहलाये।
जिसके उर तेरा वास रहे, वो श्रीपति जग में बन जाये॥ हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ''श्री''निवासिन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥12॥

13. हर अंग-अंग वा अंग पूर्व, माँ आप रूप में खूब सजे।
'आचार सूत्र' द्वय पाद लगे, जिसमें स्वरमय पाजेब[4] बजे॥ हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आचार सूत्र कृतपादायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥13॥

---

1. घड़ा, 2. देने वाली, 3. भरण-पोषण करने वाली, 4. पायल।

14. ठाणांग और समवाय अंग, माँ तेरी सुदृढ़ जंघायें।
जिसको लखकर भवि जीवों की, मिट जाती मिथ्या शंकायें॥
हे ज्ञान निधी माँ सरस्वती, सब जीवों का अज्ञान हरो।
हम करें अर्चना अर्घ लिए, हमको सद्ज्ञान प्रदान करो॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्थानांग समवायांगजंघायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥14॥

15. व्याख्या प्रज्ञप्ति ज्ञातृधर्म, कथांग अंग तुम मनहर है।
शुचि गूढ़ अंग मैया तेरा, सन्मार्ग दिवाकर भ्रमहर है॥ हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री व्याख्या प्रज्ञप्ति–ज्ञातृ–धर्मकथांग चारूरूभासुरायै नमः अर्घ्यं नि...॥15॥

16. तुम उदर उपासक अंग बना, जो श्रावक धर्म बताता है।
यह श्रमणों की चर्या अतिशय, दृष्टांत सहित समझाता है॥ हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उपासकांग सन्मध्यायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥16॥

17. नाभि है अंतकृद्दशांग, जो अनहद नाद सुनाती है।
चैतन्य चमत्कारों के स्वर, गहराई से गुंजाती है॥ हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अंतकृद्दशांग नाभिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥17॥

18. आनुत्तरोपपादिक दशांग और प्रश्न व्याकरण अंग महा।
कुच कलश युग्म मनहारी है, जिससे ज्ञानामृत क्षीर बहा॥ हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनुत्तरोपत्तिदशप्रश्नव्याकरणस्तन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥18॥

19. है श्री विपाक सूत्रांग श्रेष्ठ, वक्षस्थल मैया मनहारी।
कर्मों के फल को दिखलाये, संकट में दे समता भारी॥ हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विपाकसूत्र सद्वक्षसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥19॥

20. श्री दृष्टि प्रवाद अंग अम्बा, तुम अंक विशाल कहाता है।
जिसमें आ हर भूला भटका, शुचि सम्यक्दर्शन पाता है॥ हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दृष्टिवादांग अंकधरायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥20॥

21. परिकर्म सूत्र विपुलांस कंठ, जिससे शोभे तू जगदम्बा।
मैं पाऊँ मुक्ति सूत्र श्रेष्ठ, तुम शरणा में आके अम्बा।।
हे ज्ञान निधी माँ सरस्वती, सब जीवों का अज्ञान हरो।
हम करें अर्चना अर्घ लिए, हमको सद्ज्ञान प्रदान करो।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परिकर्म महासूत्रविपुलांस विराजितायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

22. दो प्रज्ञप्ति शशि दिनकर की, तुम बाहुलता कहलाती है।
शशि रवि के सर्व रहस्य बता, मुक्ति का पता बताती है।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्रमार्तंड प्रज्ञप्ति भास्वद्बाहुसुबल्लयै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

23. बहु द्वीप व सागर प्रज्ञप्ति, 'कर' श्रेष्ठ तुम्हारे कहलाये।
सब द्वीप सिंधु का ज्ञान करा, श्री मोक्ष द्वीप तक ले जाये।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपसागर प्रज्ञप्ति सत्करायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

24. व्याख्या प्रज्ञप्ति की शाखा, कर अंगुलि मैया तेरी है।
जिसकी पाँचों ही शाखाऐं, मेटे भव-भव की फेरी है।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री व्याख्याप्रज्ञप्ति विभ्राजत्पंचशाखा मनोहरायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

25. प्रथमानुयोग तुम वदन मात, मानो जग का मुख मण्डल है।
सब महापुरुष की कथा कहे, दर्पणवत अतिशय निर्मल है।। हे ज्ञान...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वानुयोगवदनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

(नरेन्द्र छन्द)

26. चौदह पूर्वों में पूरबगत, आर्या तेरा चिबुक बना।
तत्व अर्थ प्रगटाने वाला, वो ही श्रुत का सबक बना।।
विद्यादेवी मोक्षदायिनी, कामरूपिणी जग मैया।
तुमको ध्यायें भक्ति रचायें, पार करो भव से नैया।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वाख्यचिबुकांचितायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

27. श्री उत्पाद पूर्व हे गौरी !, नाक तुम्हारी सुन्दर है।
जग की सुन्दरता की मानो, तू ही मात समुन्दर है।।
विद्यादेवी मोक्षदायिनी, कामरूपिणी जग मैया।
तुमको ध्यायें भक्ति रचायें, पार करो भव से नैया।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उत्पादपूर्व सन्नासायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

28. अग्रायणी पूर्व हे श्रुत्यै, दंतावली बन दमक रही।
मानो उससे जैनागम की, कोटि रश्मियाँ चमक रही।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अग्रायणीयदंतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

29. मैया ! तेरे अधर मनोहर, जिन पर शुभ संवाद रहे।
इक वीर्यानुप्रवाद और इक, अस्ति नास्ति प्रवाद कहे।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वीर्यानुप्रवाद-अस्तिनास्ति प्रवादोष्ठायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

30. ज्ञान प्रवाद कपोल तुम्हारे, वृत्ताकार अनुपम है।
केवलज्ञान दिलाने वाले, बीजभूत श्रुत उत्तम है।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्ञान प्रवाद कपोलायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

31. रसना सत्य प्रवाद तुम्हारी, सत्य सुधारस स्वादी है।
हित मित प्रिय वचनामृत दो माँ, हम भी इसके आदी हैं।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सत्यप्रवादरसनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

32. आत्मप्रवाद महा हनु तेरा, आत्म तत्व दर्शाता है।
जिस पर श्रद्धा कर हर प्राणी, परमातम बन जाता है।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आत्मप्रवाद महाहनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

33. तालु कर्म प्रवाद कहाये, चाल कर्म की समझाये।
ताल ठोक जो भिड़े कर्म से, उनकी जय माँ करवाये।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कर्मप्रवाद सत्तालवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

34. प्रत्याख्यान प्रवाद मात का, श्रेष्ठ ललाट कहाता है।
त्याग मार्ग दिखला भव्यों का, उच्च ललाट कराता है।।
विद्यादेवी मोक्षदायिनी, कामरूपिणी जग मैया।
तुमको ध्यायें भक्ति रचायें, पार करो भव से नैया।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रत्याख्यानललाट्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

35. श्री विद्यानुप्रवादपूर्व, कल्याण नाम द्वय लोचन हैं।
जैन धर्म का अतिशय दर्शा, करते कर्म विमोचन हैं।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विद्यानुवाद–कल्याण नाम धेय सुलोचनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

36. प्राणावाय पूर्व है मैया, तेरी भृकुटी ज्ञान कुटी।
क्रिया विशाल बनी अति सुन्दर, माँ तेरी दूजी भृकुटी।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्राणावाय क्रिया विशाल पूर्व भ्रूधनुर्लतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

37. लोक बिंदु सारांश चूलिका, श्रवण श्रेष्ठ कहलाते हैं।
शरणागत भव्यों को हितकर, अमृत श्रवण कराते हैं।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री लोकबिंदु महासार चूलिका श्रवणद्वयायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

38. पाँच चूलिका में थलगत ही, तन में उत्तम शीर्ष अहा।
उसको पूजूँ चित्त बसाऊँ, पाऊँ मुक्ति शीर्ष महा।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्थलगाख्यलसच्छीर्षायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

39. नीर गता की चंचल लहरें, केश राशि कहलाती है।
चंचल मन को निश्चल करती, जग का बोध कराती है।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जलगाख्यमहाकचायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

40. मायागता मात की माया, शुचि लावण्य समाया है।
हर उपमा से उत्तम अम्बा, तुझको शीश झुकाया है।। विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मायागतसुलावण्यायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

41. रूपगता शुभ रूप आपका, रूपातीत बनाता है।
आप रूप ध्या हर भव्यातम, सिद्ध रूप को पाता है॥
विद्यादेवी मोक्षदायिनी, कामरूपिणी जग मैया।
तुमको ध्यायें भक्ति रचायें, पार करो भव से नैया॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री रूपगाख्यसुरूपिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

42. गगन गता सौंदर्य कहाये, त्रिभुवन पूजित पावन है।
शुद्ध आत्म सौंदर्य दिलाये, वाग्मी तू मन भावन है॥ विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आकाशगत सौंदर्यायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

43. मोर तुम्हारा सुन्दर वाहन, दिव्य ध्वनि सुन नृत्य करें।
पीछी दे निर्ग्रन्थ श्रमण को, श्रावक को कृत-कृत्य करे॥ विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कलापि सुवाहनायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

44. नय निश्चय व्यवहार निराले, नुपूर गुंजते जीवन में।
नुपूर नाद आल्हाद दिलाये, सम्यग्ज्ञान जगे मन में॥ विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निश्चयव्यहारदृङ्नूपुरायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

45. बोध आपकी महामेखला, आतम शोध कराती है।
अधोगमन से हमें बचाकर, ऊर्ध्व गमन करवाती है॥ विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं बोधमेखलायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

46. सम्यक् चारित शील हार है, यह श्रृंगार निराला है।
मोक्षमुकुट दिलवाये निश्चय, जग इसका मतवाला है॥ विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यक्चारित्रशीलहारायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

47. ज्ञान ज्योति से उज्ज्वल मैया, महोज्ज्वला श्रुतपाणी है।
मोह तिमिर को दूर भगाये, उज्ज्वल श्री जिनवाणी है॥ विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महोज्ज्वलायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

48. नैगम नय बन शोभा पाते, मात ! आपके बाजुबन्द।
जिस नैगम नय पे श्रद्धा रख, भविजन पाते परमानन्द॥
विद्यादेवी मोक्षदायिनी, कामरूपिणी जग मैया।
तुमको ध्यायें भक्ति रचायें, पार करो भव से नैया॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नैगमामोघकेयूरायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

49. संग्रह नय की सुन्दर चोली, माँ तेरी हमजोली है।
रत्नत्रय की गूढ़ मन्जूषा, तुमने ही माँ ! खोली है॥ विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री संग्रहानघचोलकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

50. नय व्यवहार कटक माँ तेरा, तत्व भेद दिखलाता है।
तन चेतन का भेद दिखाकर, केवलज्ञान दिलाता है॥ विद्यादेवी...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री व्यवहारोद्घकटकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

51. ऋजुसूत्र नय कंकण अहा, तुम हाथ की शोभा बना।
जिसकी प्रभा ऋजु मन करे, मैं भा रहा यह भावना॥
माँ भारती ! भव तारती, वागिश्वरी हे शारदे !।
सद्ज्ञान का वरदान दे, विद्या निधी माँ तारदे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऋजुसूत्रसुकंकणायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

52. माँ शब्द नय के पाश से, तुमने हरा भव पाश को।
हर लो मेरा भव त्रास भी, माँ तार दो इस दास को॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शब्दोज्ज्वलमहापाशायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

53. नय समभिरूढ़ महान तव, अंकुश करांगुलि में रहे।
जिससे तुम्हारे भक्त के वसु कर्म पे अंकुश रहे॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री समभिरूढ़ महांकुशायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

54. मुद्रा सु एवंभूत नय, तुम हाथ में शोभे सदा।
जिसकी प्रभा से भीत है, वसु कर्म वैरी सर्वदा।।
माँ भारती ! भव तारती, वागिश्वरी हे शारदे !।
सद्ज्ञान का वरदान दे, विद्या निधी माँ तारदे।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री एवंभूतसन्मुद्रायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

55. दश धर्म का अम्बर महा, जिससे झलकती तन प्रभा।
हमको मिले वैसा वसन, जिससे बढ़े चेतन विभा।। माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दशधर्ममहाम्बरायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

56. जपमाल है इक हाथ में, जो मोक्ष की वरमाल है।
जिसने जपा इस माल को, वो सिद्ध मालामाल है।। माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जपमालालसद्हस्तायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

57. पुस्तक रहे इक हाथ में, जिसमें भरा सर्वार्थ है।
उसके लिये मैं पूजता, बस ज्ञान पाना स्वार्थ है।। माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुस्तकांकितसत्करायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

58. माँ आपके कर्णाभरण नय और श्रेष्ठ प्रमाण हैं ।
नय व प्रमाणों से कसा, शुचि ज्ञान सम्यग्ज्ञान है।। माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नयप्रमाणताटंकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

59. प्रत्यक्ष और परोक्ष युग्म, प्रमाण की है कर्णिका।
उनसे सजा मम चित्त हो, हे विश्वरूपा ! वर्णिका ।। माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रमाणद्वयकर्णिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

60. कैवल्य ज्ञान महान है, शोभे मुकुट बन शीश पे।
वैसा मुकुट मुझको मिले, माहेश्वरी आशीष दे।। माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री केवलज्ञानमुकुटायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

61. धर शुक्ल ध्यान महानतम, सुन्दर तिलक मनभावना।
जिसने धरा इस ध्यान को, जग का तिलक वह नर बना॥
माँ भारती ! भव तारती, वागिश्वरी हे शारदे !।
सद्ज्ञान का वरदान दे, विद्या निधी माँ तारदे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शुक्लध्यान विशेषकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

62. जीवन्त अक्षर प्राण तुम स्यात्कार चिन्ह अमोघ है।
एकान्त तम को दूर कर हरता जगत व्यामोह है॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्यात्कारप्राणजीवन्त्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

63. उपदेय चित् संभाषिणी, भाषित सुमंगल दायिनी।
मम चित्त को मंगल करो, हे मात ! मोक्ष प्रदायिनी॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिदुपादेयभाषिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

64. जिनमत अनेकांतात्ममय, आनंद है माँ आपमें।
आनंद पद्मासन बना, हंसासनी जिस पर रमें॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनेकांतात्मकानंदपद्मासन निवासिन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

65. सित सप्तभंगी छत्र तुम, हे मात ! वीणा वादिनी।
वीणा सुनाये सप्त स्वर, माँ सप्त भंग प्रवादिनी॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सप्तभंगीसितच्छत्रायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

66. नय षट्क की दीपावली आलोक करती लोक में।
सब जीव को शिव सुख मिले, तुम ज्ञान के आलोक में॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नयषट्कप्रदीपिकायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

67. द्रव्यार्थ नय का है चंवर, औ संग पर्यायार्थ नय।
हमको करो माँ नय कुशल, कस्बद्ध है इतनी विनय॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री द्रव्यार्थिक नयानूनपर्यायार्थिक चामरायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

68. कैवल्य कामिनी शिव सखी, पूरी करो मम कामना।
कैवल्य रवि का हो उदय, मिट जाये मिथ्यातम घना॥
माँ भारती ! भव तारती, वागिश्वरी हे शारदे !।
सद्ज्ञान का वरदान दे, विद्या निधी माँ तारदे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कैवल्यकामिन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

69. तू ज्योतिमय दृग ज्योतिमय, मम आत्म ज्योति को जला।
माँ ज्योति प्रज्ञा की जला, अज्ञान तम जड़ से भगा॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्योतिर्मय्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

70. सम्पूर्ण वांग्मय रूपिणी, सत् ज्ञान गहनों से सजी।
तुम द्वार पे हे सुन्दरी, अध्यात्म शहनाई बजी॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वाङ्मयरूपिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

71. अविरुद्ध पूर्वापर तु ही, त्रयलोक में अति शुद्ध है।
जिस पर रहे तेरी कृपा, वो मूर्ख होता बुद्ध है॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वापराविरुद्धायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

72. गजगामिनी गीर्वाणश्री गौ मात तू जग व्यापिनी।
हर जीव पे तेरी कृपा, होवे जगत् सुख दायिनी॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

73. श्रुत बीज केवलज्ञान का, हे अम्ब ! तुमसे ही मिले।
अतएव तू श्रुत मात है, मुनिनाथ कहते हैं भले॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रुत्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

74. तुम देव की अधिदेव हो, त्रय लोक की श्रुत देव हो।
तुम नाम माला जो जपे, विद्यापति स्वयमेव हो॥ माँ भारती !...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवाधिदेवतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

75. तुमसे सदा मंगल रहे, त्रैलोक्य मंगल कारिणी।
मम सब अमंगल दूर हो, सर्वार्थ मंगल दायिनी॥
माँ भारती ! भव तारती, वागिश्वरी हे शारदे !।
सद्ज्ञान का वरदान दे, विद्या निधी माँ तारदे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिलोकमंगलायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शेर छन्द)

76. तुम भव्य की शरण्य, मात भक्त वत्सला।
तुम ज्ञान सुधा हेतु, भक्त भक्ति से चला॥
हे मात ! हमें आज, ज्ञान घुट्टी पिला दे।
भवजाल से इस, लाल को तू छुट्टी दिला दे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भवशरण्यायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

77. सर्वज्ञ मुख निवासिनी, तू सर्व वंदिता।
भविजीव को बताये, मात मोक्ष का पता॥ हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्ववंदितायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

78. हे बोध मूर्ति मात !, हमको पूर्ण बोध दो।
संसार शोध छोड़, श्रेष्ठ आत्म शोध हो॥ हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बोधमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

79. माँ शब्द मूर्ति शब्द अब्धि के भी पार हो।
मम शब्द छन्द भक्ति, काव्य में निखार हो॥ हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शब्दमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

80. तू एक चिदानंद रूपिणी महेश्वरी।
निज आत्म चिदानंद हेतु अर्चनाकरी॥ हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिदानंदैक रूपिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

81. हर प्राणि के हृदय की, आज एक वाणी है।
संसार पार तारती, माँ जैन वाणी है।।
हे मात ! हमें आज, ज्ञान घुट्टी पिला दे।
भवजाल से इस, लाल को तु छुट्टी दिला दे।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनवाण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

82. 'वरदा' हमें सद्ज्ञान का वरदान दो सदा।
दुष्कर्म नाश मुक्ति शर्म, प्राप्त हो मुदा।। हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वरदायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

83. 'नित्या' तुम्हारे द्वार नृत्य अप्सरा करे।
पाने को सत्य तथ्य नित्य अर्चना करे।। हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नित्यायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

84. तुम भुक्ति मुक्ति फल प्रदात्री दान मूर्ति हो।
माँ तुम ही दान चिंतामणि कृपा मूर्ति हो।। हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भुक्तिमुक्ति फलप्रदायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

85. 'वागीश्वरी' तू ईश्वरी है, वाग् मंत्र की।
माँ तू ही सिद्धी दात्री, सर्व यंत्र-तंत्र की।। हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वागीश्वर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

86. हे 'विश्वरूपा' ज्ञान गात्र, विश्वव्यापिनी।
पुरुषार्थ सिद्धी आप करें, कामरूपिणी।। हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

87. हर शब्द ब्रह्म रूप, आत्म ब्रह्म जगाये।
माँ शब्द ब्रह्म रूपिणी, ये राज बताये।। हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शब्दब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

88. शुभ भावना जगा रही, तू माँ 'शुभंकरी'।
मम अशुभ भावना हरो, दो पुण्यमंजरी॥
हे मात ! हमें आज, ज्ञान घुट्टी पिला दे।
भवजाल से इस, लाल को तु छुट्टी दिला दे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शुभंकर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

89. सब जीव का हित, सोचती मैया 'हितंकरी'।
हमने भी आज आत्म हित, की भावना करी॥ हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री हितंकर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

90. जो धर्म अर्थ काम, मोक्षश्री को दिलाये।
वो 'श्रीकरी' माता ही, आत्म श्रेय दिलाये॥ हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रीकर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

91. मम सर्व विषम भाव हरो अम्ब 'शंकरी' !।
प्रशमादि भाव लाभ हेत प्रार्थना करी॥ हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शंकर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

92. 'सत्या' तू ही सत्यार्थ, रूप को प्रकाशती।
भव्यात्म के असत्य आदि अघ निवारती॥ हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सत्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

93. माँ तू क्षयंकरी है, सर्व पाप क्षय करे।
अज्ञान असुर जीत, आत्म को अभय करे॥ हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वपापक्षयंकर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

94. शिव मार्ग पे चलाये, मात तू 'शिवंकरी'।
शिववास हेतु भक्ति, सहित वंदनाकरी॥ हे मात ! हमें...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शिवंकर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

95. हर भव्य को तू ईश, बनाये 'महेश्वरी'।
तू सर्व इन्द्र वा, मुनीश की भी ईश्वरी॥
हे मात ! हमें आज, ज्ञान घुट्टी पिला दे।
भवजाल से इस, लाल को तु छुट्टी दिला दे॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महेश्वर्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

96. 'विद्यादेवी' शारदा, दो विद्या का दान।
श्रुत अमृत का पान, कर बन जाऊँ भगवान॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विद्यायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

97. 'दिव्यध्वनि' जिसको मिले पाये दिव्य स्वरूप।
दिव्य भाव से मैं नमूँ बन जाऊँ शिवभूप॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दिव्यध्वन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

98. मरते को करती अमर, 'माता' आप महान।
पाऊँ अमृत लोक मैं, कर ज्ञानामृत पान॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

99. विद्याम्बुज पीकर करे, विद्वतगण आल्हाद।
माता आप प्रसाद से, मिटे सर्व अवसाद॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विद्वदाल्हाददायिन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

100. सर्व कलाधर मात तू जीता काल कराल।
सर्व कला देकर भला, करती है त्रय काल॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कलायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

101. ज्ञानवती तू 'भगवती', बैठे जिसमें आन।
वो जीते मद मोह को, बन जाता भगवान॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भगवत्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

102. केवल रवि आलोक से, 'दीप्त' आपका रूप।
दीप्त करो मम भाव को, पाऊँ आत्म स्वरूप॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दीप्तायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

103. सर्व शोक को नाशती तू है मात अशोक।
जहाँ होय तुम अर्चना, वहाँ रहे ना शोक॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वशोक प्रणाशिन्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

104. आप महिर्षी धारणी, धरे गुरु निजशीश।
जिन पर हो तेरी कृपा, वो बनता जगदीश॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महर्षिधारिण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

105. ब्रह्माणी 'पूता' तेरे तीर्थंकर से पूत।
अब तक क्यों रीता रहा, तेरा भक्त सपूत॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

106. गणाधीश अवतार से, करे जगत् उद्धार।
गणधर गुरु श्रुत शारदा, पहुँचाये भव पार॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गणाधीशावतारितायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

107. आत्म ब्रह्म चिद्लोक में, जिसका थिर आवास।
उनके पावन ध्यान से, मिलता सिद्ध निवास॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ब्रह्मलोक स्थिरावासायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

108. द्वादश आम्नायें विमल देवी तू तद्रूप।
जो ध्याये प्रतिपल इसे वो पाये चिद्रूप॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री द्वादशाम्नाय देवतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ *(शंभु छन्द)*

जो अष्टोत्तर शत नाम तेरे, भक्ति से प्रतिदिन गाता है।
वो शास्त्र विशारद महाकवि, प्रवचन में पटुता पाता है॥

पूर्णायु यश उत्तम वैभव, धन-धान्य संपदायें पाये।
श्री ब्रह्म सूरि मुनि कहते हैं, वो मुनि श्रुत केवलि बन जाये॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गत द्वादशांगमयी सरस्वतीदेव्यै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- हेम रत्न के कलश ले करते शांतिधार।
ज्ञान सलिल उर में बहे धोये आत्म विकार॥
शांतये शांतिधारा.....।

जल भूमिज बहु रत्न के सुरभित दीप्त सरोज।
अर्पित हर्षित भाव से पायें चिन्मय योग॥
दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-(1) ॐ ह्रीं अर्हन्मुख कमलवासिनी पापात्म क्षयंकरी वद-वद वाग्वादिनी ऐं ह्रीं नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः स्वाहा॥ (इस मंत्र का 9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- जिनमुख भाषित शारदा, गणधर धारे शीश।
उनकी जयमाला पढ़ूँ पाऊँ प्रज्ञाशीश॥

(शम्भु छंद)

जय-जय जिनवाणी सरस्वती, हे ज्ञान गंग श्रुत महोदधी।
जयमाल तुम्हारी गाता हूँ, तुम श्रुत देवी मैं लघु बुद्धी॥
जिनमुख से तुम अवतीर्ण हुई, औ समोशरण है महल महा।
द्वादश अंगों से कल्पित है, त्रैकालिक सुन्दर रूप अहा॥1॥

सम्यग्दर्शन का तिलक श्रेष्ठ, शुचि संयम की सुन्दर साड़ी।
रत्नत्रय के रंगीन वस्त्र, जिनको पूजे यह त्रस नाड़ी॥
द्वादश अंगों से अंग सजे, चौदह पूर्वों के आभूषण।
माँ स्याद्वाद का शस्त्र लिये, हरती जग के मिथ्यादूषण॥2॥

तुम मुकुट चन्द्र से शोभित है, जिस पर जिनदेव विराजित हैं।
सुन्दर मयूर पर कमलासन, जिस पर श्रुतदेवी राजित है॥

अनुयोग चार चऊ पाणि है, इक कर में श्री जिनवाणी है।
दूजे में अक्ष जाप माला, तीजे कर वीणा पाणि है॥3॥
चौथे कर श्रेष्ठ कमंडल है, जिसमें गर्भित भूमंडल है।
प्रज्ञा व अभय प्रदान करे, हर्षित तेरा मुख मंडल है॥
तुम पाश हरे भव पाश सदा, अंकुश कर्मों पर अंकुश है।
सब नाम तुम्हारे सार्थक हैं, जिसको ध्याकर हर मन खुश है॥4॥
भारत माता श्रुत भारती तुम, माँ सरस्वती दो सरसमती।
माँ आप शारदा ब्रह्माणी, शुभ हंसगामिनी अभयवती॥
तुम नाम विदूषा वरदा है, गौ गिर वाणी कल्याणी है।
सुकुमारी वागीश्वरी तथा, माँ ब्रह्मचारिणी ज्ञानी है॥5॥
चारित्र कलाधर कलानिधी, जगदम्ब ब्राह्मिणी श्रुतदेवी।
लघुभाषा और महाभाषा, प्रगटी तुमसे जिनमुख सेवी॥
सब युवती से अति सुन्दर तुम, जगमाता श्री जिनवाणी हो।
तुम धर्म सृष्टि का मूल स्रोत, तुम अक्षय ज्ञान प्रदानी हो॥6॥
माँ हंस तिहारा प्रज्ञा का, शुचि भेद ज्ञान दर्शाता है।
रंगीन पंख से सजा मोर, सुन्दर वाहन कहलाता है॥
श्री कल्पवृक्ष है अनेकांत, जिसमें सब अंत समाते हैं।
तेरे रत्नत्रय सरवर में, गोता मुनि हंस लगाते हैं॥7॥
हे आर्या ! जो तुमको ध्याये, श्रुत कल्प वृक्ष में रम जाये।
वो जड़धी शास्त्र विशारद हो, केवलि श्रुत केवलि पद पाये॥
इक हरिण श्रमण के आश्रम में, सुनता था प्रतिदिन जिनवाणी।
वो बालि मुनि लंकेश जयी, श्रुत सिद्ध बने केवलज्ञानी॥8॥
मरूभूति प्रज्ञा कुल मद में, नाना गतियों में भरमाये।
जब जिनश्रुत गुरु पे श्रद्धा की, सुकुमाल बने दिव सुख पाये॥
धरसेन गुरु से शिक्षित थे, श्री पुष्पदंत वा भूतबली।
जब चली लेखनी दोनों की, कलियुग में श्रुत गंगा निकली॥9॥

कौण्डेश नाम गोपालक ने, जिन मुनि को शास्त्र प्रदान किया।
वो कुन्दकुन्द आचार्य बने, बहु ग्रंथ रचे कल्याण किया॥
जिनश्रुत रक्षा में न्यौछावर, निकलंक वीर बलिदानी है।
अग्रज अकलंक महातार्किक, तुम पर अर्पित श्रद्धानी है॥10॥

गुरुवर समन्त भद्रेश्वर ने, जब पाठ रचा अति मनहारी।
तब विग्रह फोड़ा प्रगट हुए, श्री चन्द्र प्रभो अतिशयकारी॥
श्री पूज्यपाद वा नेमिचन्द्र, गुरु वीरसेन, जिनसेन हुए।
मुनि मानतुंग, श्री कुमुदचन्द्र, श्रुत लेखक गुरु रविषेण हुए॥11॥

इत्यादिक जैनाचार्य कई, श्रुत रचना में तल्लीन हुए।
जैनागम के अति गूढ़ सूत्र, ले ताड़पत्र उत्कीर्ण किये॥
भूपाल कुंवर ने श्रद्धा से, तुम नाम मंत्र का जाप किया।
बन महाकवि क्षणभर में ही, चउविंशति स्तव पाठ किया॥12॥

दक्षिण के शांति सागर ने, तालों से तुम्हें निकाला है।
जिनश्रुत प्रगटा फिर भारत में, फैलाया नव उजियाला है॥
गुरु आदि शिष्य महावीर गुरु, फिर श्रुत की महिमा फैलाये।
मुनि आर्या को बहु ग्रंथ पढ़ा, बहु शास्त्र रचे वा रचवाये॥13॥

जिनवाणी माँ के लालों में, विख्यात कुन्थुसागर गुरुवर।
बहु ग्रन्थ सृजेता महाकवि, आचार्य कनकनंदी ऋषिवर॥
जो सम्यक् श्रद्धा धर उर में, सम्यक् ग्रंथों का सृजन करें।
वो आगे अर्हत् पद पाये, शिव लक्ष्मी उसका वरण करे॥14॥

जो ज्ञान ध्यान श्रुत रचना में, अपना शुभ द्रव्य लगाते हैं।
वो नवनिधी चौदह रत्न वरें, चक्री जिनवर बन जाते हैं॥
हे मैया ! लाल तिहारा मैं, माँ मुझको प्रज्ञा से भर दो।
मुझ 'गुप्तिनंदी' को मोक्ष मिले, ऐसा पावन अक्षय वर दो॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती वाग्वादिनिभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

जो भव्य विद्या लाभ की, करते सुमंगल भावना।
जगदम्ब पे आस्था धरे, करते महा आराधना।
वो चन्द्र सम उज्ज्वल सुयश, अक्षुण्ण पा इस लोक में।
त्रय गुप्तिधर शिवराज वर, शाश्वत रहे शिवलोक में॥

इत्याशीर्वादः दिव्यपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री सरस्वती माता की आरती

रचना : मुनि सुयशगुप्त

(तर्ज-ॐ जय महावीर प्रभो...)

ॐ जय जिनवाणी माँ, मैय्या जय जिनवाणी माँ
आरती करते सब मिल-2, पाने मुक्ति रमा॥
ॐ जय जिनवाणी माँ...

श्री जिनमुख से प्रकटी मैया, द्वादशांग वाणी।
सरस्वती श्रुतदेवी-2, माँ तुम ब्रह्माणी॥1॥
ॐ जय जिनवाणी माँ...

चार भुजायें तेरी मैय्या, बांटे सुख मेवा।
गणधर मुनि आर्याऐं-2, करते तव सेवा॥2॥
ॐ जय जिनवाणी माँ...

कर में अपने दीप लिये हम, नृत्य करें भारी।
सर्व अमंगल हरती-2, हो मंगलकारी॥3॥
ॐ जय जिनवाणी माँ...

जो तेरे गुण गाता देवी, वो शिव सुख पाता।
अल्पबुद्धि अज्ञानी-2, ज्ञानी बन जाता॥4॥
ॐ जय जिनवाणी माँ...

मंगल द्रव्य चढ़े तुम द्वारे, मंगल वाद्य बजे।
सोलह शृंगारों से-2, प्रतिमा रोज सजे॥5॥
ॐ जय जिनवाणी माँ...

शोध बोध कर बनें निरंजन, पूर्ण बोधि पायें।
श्रमण 'सुयश' भक्ति से, श्रुत-कीर्ति गाये॥6॥
ॐ जय जिनवाणी माँ...

आरती नं. 2

रचना : मुनि चन्द्रगुप्त

(तर्ज : जय-जय जगदंबे काली..)

मैया जिनवाणी प्यारी-प्यारी, जिनवर की वाणी प्यारी।
आरतियाँ गाऊँ तेरी भारती। हो मैया....

जन्मदायिनी माता से भी बड़ी शारदा माता। बड़ी...
जन्म दिया औरों ने पर तू जन्म सुधारे माता॥ जन्म...
माँ तुझको मात बनाऊँ, तेरा बेटा बन जाऊँ॥ आरतियाँ...

हंसवाहिनी मयूरवाहिनी ज्ञानदायिनी माता। ज्ञान...
तीर्थंकर मुखकमल वासिनी तीर्थंकर की माता॥ तीर्थंकर...
चम-चम-चम दीप जलाऊँ, छम-छम-छम नृत्य रचाऊँ॥ आरतियाँ...

मयूरवाहिनी तुझे देखकर मन मयूर नाचे हैं। मन...
सा रे गा मा प ध नी सा सातों सुर बाजे हैं॥ सातों...
ता थई-थई थैया-थैया, नाचूँ गाऊँ मैं मैया॥ आरतियाँ...

श्री विद्या प्राप्ति विधान से, मैया विद्या देना। मैया...
'चंद्रगुप्त' को गुप्तित्रय की, सुंदर विद्या देना॥ सुंदर...
मैया की छैया पाऊँ, भव की नैया तिर जाऊँ॥
आरतियाँ गाऊँ तेरी भारती हो मैया...

***

आरती नं. 3

रचना : आर्यिका आस्थाश्री

(तर्ज- मेरा मन डोले....)

जय जिनवाणी, जग कल्याणी, हम करे आरती भारती
जय सरस्वती जग मैया की...

1. अर्हंतों के मुख से प्रगटी, द्वादशांग जिनवाणी
कर में वीणा हंसवाहिनी, तू जग की कल्याणी....2 ओ मैया तू...
ऋषि मुनि ध्याये, सुर नर गाये, तू ही माँ भव से तारती
जय सरस्वती....

2. वरद हस्त हम सबके सिर रख, वरदा माँ वरदानी।
लाल तेरा अज्ञानी हूँ मैं, मुझे बनादो ज्ञानी....2 ओ मैया मुझे....
सरगम बाजे, झूमे नाचे, तू दुःख से हमें उबारती
जय सरस्वती....

3. मुख पे मेरे नाम सदा हो, सरस्वती माँ तेरा।
वाणी माँ ऐसी वाणी दो, काटूँ भव का फेरा....2 ओ मैया काटूँ....
गुप्तिसूरी, काटे दूरी, 'आस्था' भी उर में धारती....
जय सरस्वती....

***

प्रशस्ति

(शम्भु छंद)

जय चौबीसों तीर्थंकर की, जय शांतिनाथ जगदीश्वर की।
जय पंच परम परमेश्वर की, जय ऋद्धिपति सब गणधर की॥
जय तीन लोक त्रय कालों में, त्रिभुवन पूजित जिन प्रतिमा की।
जय जिनमुख वासित सरस्वती, जिनवाणी श्री जगदम्बा की॥1॥

महावीर प्रभु के शासन में, श्रुत लेखक बहु आचार्य हुए।
उनके नायक श्री कुन्दकुन्द, विख्यात जैन आचार्य हुए॥
उनका अनुचर श्री मूलसंघ, उनमें आदि सागर गुरु थे।
महावीर कीर्ति उनसे दीक्षित, बहु भाषा आगम विद गुरु थे॥2॥

उनके शिष्यों में लोक सिद्ध, कुंथुसागर गणनायक हैं।
वे ही मम मुनि दीक्षा दाता, करुणा मूर्ति सुखदायक हैं॥
उनसे दीक्षित श्री कनकनंदी, वैज्ञानिक धर्माचार्य अहा।
नंदी संघ के शिक्षा दाता, मम शिक्षा गुरु आचार्य महा॥3॥

द्वय गुरुओं की अनुकंपा से, शुभ भाव हुए श्रुत रचना के।
बहु भक्ति काव्य, पूजा विधान, श्रुत संवर्द्धन संरचना के॥
वैशाख कृष्ण दशमी बुध को, सुमुहूर्त्त महेन्द्र मनोहर था।
संवत पच्चिस सौ सैंतिस का, वीराब्द वर्ष अति सुखकर था॥4॥

कैलाश नगर दिल्ली में रच, राधेपुरी में सम्पूर्ण किया।
श्री सहसकूट में रत्नबिम्ब, तीर्थेश चन्द्र जिन बसे हिया॥
मम संघ चित्त आराध्यदेव, श्री शांतिनाथ की छाया में।
गुरु ब्रह्म सूरि कृत मंत्रों से, विद्याम्बा तुमको ध्याया है॥5॥

दोहा– जब तक रवि शशि लोक में, तब तक रहे विधान।
विद्या प्राप्ति विधान रच, भक्त बने विद्वान॥
विद्या कुल वैभव बढ़े, बने अंत भगवान।
वाक्य सिद्ध श्रुत सिद्ध बन, करे आत्म उत्थान॥

इत्याशीर्वादः

समुच्चय अर्घ

(शेर छंद)

मैं पूजता अरिहंत सिद्ध सूरि को सदा।
उवज्झाय सर्व साधु और शारदा मुदा।।
गणधर गुरु चरण की नित्य अर्चना करूँ।
दश धर्म सोलह भावना की अर्चना करूँ।।1।।

अरहंत भाषितार्थ दया धर्म को भजूँ।
श्री तीन रत्न रूप मोक्ष धर्म को जजूँ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य को ध्याऊँ।
चैत्यालयों का ध्यान लगा अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

सब सिद्ध क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र को भजूँ सदा।
औ तीन लोक के समस्त तीर्थ सर्वदा।।
चौबीस जिनवरों व बीस नाथ को ध्याऊँ।
जल आदि अष्ट द्रव्य ले पूर्णार्घ चढ़ाऊँ।।3।।

दोहा : जल आदिक वसु द्रव्य की, लेकर आये थाल।
महाअर्घ अर्पण करें, प्रभु को नमें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरू संबंधी अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर,

मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, धर्मतीर्थ, वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा, अहिच्क्षेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव णमोकार ऋषि तीर्थ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत–भविष्यत–वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे..... प्रान्ते–नगरे.....मासानांमासे..... मासे.....पक्षे.....तिथौ.....वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छवास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पाञ्जलि क्षेपण करते रहें)

शशि सम निर्मल जिन मुखधारी, शील सहस्र गुणों के धारी।
लक्षण वसु शत त्रयपदधारी, कमल नयन शांति सुखकारी॥1॥

(नोट–यहाँ शांतिधारा करें।)

शांतिनाथ पंचम चक्रीश्वर, पूजें तुमको इन्द्र मुनीश्वर।
शांति करो हे शांति ! जिनेश्वर, जगत् शांतिहित नमते गणधर॥2॥

आठों प्रातिहार्य मनहारी, ये जिन वैभव हैं सुखकारी।
तरू अशोक पुष्पों की वर्षा, दिव्य ध्वनि सिंहासन रवि सा॥3॥

छत्र चँवर भामंडल चम–चम, देव–दुंदुभि बजती दुम–दुम।
शांति करो त्रय जग में स्वामी, शीश झुकाता तुमको स्वामी॥4॥

आप अनंत चतुष्टय धारी, मंगल द्रव्य आठ अघहारी।
सर्व विघ्न प्रभु आप नशाओं, हे शांति प्रभु ! शांति दिलाओ ॥5॥
पूजक राजा शांति पायें, मुनि तपस्वी शांति पायें।
राष्ट्र नगर में शांति छाये, शांति जगत् में हे जिन ! आये ॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

(दोनों हाथ में चावल या पुष्प लेकर करबद्ध हो विसर्जन पाठ पढ़ें मंत्र के साथ पुष्पाञ्जलि करें)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

जाने अनजाने हुई, प्रभु पूजा में चूक।
मैं अज्ञान अबोध हूँ, क्षमा करो सब चूक ॥1॥
जानूँ नहीं आह्वान मैं, पूजा से अनजान।
ज्ञान विसर्जन का नहीं, क्षमा करो भगवान ॥2॥
अक्षर पद और मात्रा, व्यंजनादि सब शब्द।
कम ज्यादा कुछ कह दिया, छूट गये हों शब्द ॥3॥
मिथ्या हो सब दोष मम, शरण रखो भगवान।
तव पूजा करके प्रभु, बन जाऊँ भगवान ॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः-3ज:-3स्वाहा।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(9 बार णमोकार का जाप करें।)

(नोट-दीपक लेकर श्रीजी की मंगल आरती करें।)

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : गंध पुष्प प्रभु रज यही, इसको शीश झुकाय।
पुष्प लिये आह्वान के, अपने शीश लगाय ॥

(तुभ्यम् नमस्त्रि बोलते हुये भगवान को गुरु को नमस्कार करें।)

***